JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रंग और राग का समन्वय – राजस्थानी लघु चित्रशैली

(एक संक्षिप्त अध्ययन)

डॉ. मनोज टेलर
एसोसिएट प्रोफेसर
विजुअल आर्ट विभाग
शोध निर्देशक
वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली (राजस्थान)

नीता वर्मा
विजुअल आर्ट विभाग
शोध छात्र
वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली (राजस्थान)

16 वीं और 17 वीं शताब्दी में शुरू होने वाले भारतीय चित्रकला के अधिकांश स्कूलों में रागमाला चित्रों का निर्माण किया गया था और आज इसे पहाड़ी रागमालाय राजस्थान या राजपूत रागमालाय दक्कन रागमाला और मुगल रागमाला के नाम से जाना जाता है।

इन लघु चित्रशैली में प्रत्येक राग को एक रंगय मनोदशाय एक नायक और नायिका की कहानी का वर्णन करने वाला एक पद्य द्वारा व्यक्त किया जाता है, यह मौसम और दिन और रात के समय को भी स्पष्ट करता हैय जिसमें एक विशेष राग गाया जाता हैय और अंत में अधिकांश चित्र राग से जुड़े विशिष्ट हिंदू देवताओं का भी चित्रांकन करते हैंय जैसे भैरव या भैरवी राग के प्रतीक रूप में शिवय श्री से देवी आदि। पेंटिंग न केवल रागों को दर्शाती हैं, बल्कि उनकी पत्नियों (रागिनियाँ), उनके कई पुत्रों (रागपुत्र) और बेटियों (रागपुत्री) को भी दर्शाती हैं। रागमाला में मौजूद छह प्रमुख राग भैरव, दीपिका, श्री, मलकौंसा, मेघा और हिंडोला हैं। इन्हें साल के छह मौसमों – गर्मी, मानसून, शरद ऋतु, शुरुआती सर्दी, सर्दी और वसंत के दौरान गाया जाता है। इन रागों से संबंधित लघु चित्रों में वर्णित ऋतु का संकेत आकृति–रंगो–प्रतीकों के रूप में बखूबी दिखता है। पष्ठभूमि के ये प्रतीक पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों, आकाश–बादलों में चित्र को ऋतु से जोड़ते हैं। वर्षा और कौंधती बिजली का चित्रण वर्षा काल का स्पष्ट संकेत है। नायक–नायिका के वस्त्र, उनके रंग भी ऋतु काल को दर्शाते हैं।

राजस्थानी चित्र शैली विशुद्ध रूप से भारतीय चित्र शैली है। राजस्थानी चित्रकला का इतिहास अति प्राचीन है। आरंभिक इतिहास से ही प्राप्त प्रमाणों में सूर्य, चाँद, पशुपति, पहाड़, ग्राम व प्रकृति आदि के चित्र मिलते हैं।

राजस्थानी चित्रकला रस–प्रधान है। भावनाओं व भक्ति और श्रृंगार तथा राधाकृष्ण की माधुर्य भावना का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख विशेषता है। राजस्थानी चित्रकला में अजन्ता शैली का समन्वय होने के कारण कलात्मकता की झलक मिलती है। मध्यकाल में मुगल शैली के सम्मिश्रण ने इसे एक नया रूप दिया।

राजस्थानी चित्रकला में रंगो का जादू विशेष उल्लेखनीय है। लाल, पीला, श्वेत एवं हरा इस शैली के प्रमुख रंग हैं। जिनकें समन्वय से चित्रकारों ने चित्रों को अनूठा एवं मनमोहक बना दिया। चटकीले, चमकदार और दीप्तियुक्त रंगों का संयोजन इस शैली की विशेषता रही हैं। भित्ति चित्रण की परम्परा में विकसित राजस्थानी अल्हड़ता और विषयवस्तु के चयन मे लोक जीवन की भावनाओं का बाहुल्य हैं। राजस्थानी चित्रकला विषय की दृष्टि से अत्यधिक विस्तृत है। राधाकृष्ण की विभिन्न लीलाएं, रामकथा, महाभारत और भागवत पुराण की विभिन्न कथायें, नायक – नायिका भेद, राग–रागिनी, बारह–मासा, ऋतुवर्णन, दरबारी जीवन, उत्सव, शिकार, राजा रानियों का चित्रांकन, लोक कथाओं आदि असंख्यविषयों पर राजस्थानी चित्रकला आधरित है, काव्य का चित्रण इस शैली की अपनी निजी विशेषता है। राजस्थान में विषयों को लेकर इतने चित्र उपलब्ध् हैं कि वे सभी एक जीवित संसार प्रस्तुत करते हैं।

प्रत्येक समाज की चित्रकला विशिष्ट होती है और वह अपनी ऊर्जा स्थानीय परंपराओं से ग्रहण करती हैं। राजस्थानी चित्रकला भी इसका अपवाद नहीं है। उसकी भी शक्ति का अंतःस्रोत यहाँ की परंपराएँ हैं। राजस्थानी चित्रशैली में संगीत व चित्रकला का अद्भूत समन्वय संसार भर की कलाओं में एक अद्वितीय उपलब्धि है । यही कारण है कि राजस्थानी चित्रशैली को कला विद्वानों ने समस्त भारतीय लघु चित्रशैलियों में महत्वपूर्ण माना है। राजस्थानी चित्रशैली में निर्मित चित्रों की रंग योजना अनूठी है । ऐसा प्रतीत होता है कि राजस्थान का समस्त सौंदर्य कलाकार ने रंग व रेखाओं के माध्यम से चित्रों में भर दिया। विषयों की विविधता इस शैली का गुण है। यहाँ के कलाकारों ने साहित्य एवं काव्य के साथ संगीत की अमूर्त तथा ध्वन्यात्मक विषय वस्तु को भी रंग एवं रेखाओं द्वारा साकार रूप प्रदान किया जो कि विश्व की किसी अन्य कला में दुर्लभ है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत पद्धति राग और रागिनियों पर आधारित है। 'रागमाला'अर्थात् 'रागों की माला'राजस्थानी चित्रकला के साथ–साथ समस्त लघु चित्र शैलियों का मुख्य विषय रहा है। राजस्थानी कलाकारों ने मध्यकालीन युग के संगीताचार्य क्षेमकरण द्वारा रचित 'रागमाला'ग्रन्थ को अपनी विषय वस्तु का आधार बनाया था। भारतीय चित्रकला के इतिहास में 'रागमाला' चित्रों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। रागमाला चित्रण के अन्तर्गत चित्रकारों ने रंगों के वास्तविक स्वरूप और उनकी ध्वनि की उपमा हेतु निर्दिष्ट उपमेय लक्षित करके चित्र बनाये है। गायन एवं वादन द्वारा अभिव्यक्त किये जाने वाले राग को रूपाकार में चित्रित करने में राजस्थान के चित्रकारों ने अद्भुत कल्पनाशीलता का परिचय दिया हैं । रागिनियों को चित्रित करने के लिए कलाकार ने प्रेम दृश्यों को आधार बनाया। प्रेम को केशव द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार 'प्रेम के दो पक्ष संयोग एवं वियोग' के रूप में दर्शाया गया है। चित्रकारों ने इसी कल्पना को अपनी रंग, रेखाओं व आकरों के माध्यम से हमारे सम्मुख साक्षात् स्वरूप को उपस्थित किया।

संगीत व राग के अमूर्त रूप को मूर्तता प्रदान करने लिये चित्रकार ने नई–नई परिस्थितियों तथा वातावरण को प्रस्तुत किया। रागमाला चित्रों में रंग और राग के मनोवैज्ञानिक संकेतों को भी प्रदर्शित करती हैं। राग–रागिनी सम्बद्ध वातावरण दृश्य विषय इस काल तथा भाव का ऐसा व्यंजक चित्रण है कि चित्र को देखने मात्र से राग अथवा रागिनी के स्वरूप, प्रकृति, समय आदि का सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता हैं। चित्रों में रंगों के अनुसार वेशभूषा में भी परिवर्तन तथा संयोग–वियोग दोनों की अवस्थाओं का ऋतुओं के परिपेक्ष्य में अत्यन्त मनोहारी चित्रण देखने को मिलता हैं। 'हिण्डोल राग'में कलाकार ने लाल, पीले, तथा हरे रंगों के माध्यम से श्रावण मास में वर्षा ऋतु को बड़े ही मनोहारी रूप में प्रदर्शित किया है तथा हिण्डोल राग को मानवीकृत रूप में साकार करने के लिए नायक रूप में कृष्ण का चित्रण किया हैं।

राजस्थानी काव्य शैली रेखा–प्रधान शैली रही है और वर्ण योजना का आधार बहुत ही मनोवैज्ञानिक है। रसों के प्रतिपादन में चित्रों की पृष्ठभूमि रसमय हो गयी है। राजस्थानी लघु चित्रशैली एवं लोक कलाएँ अधिक विकसित और सूक्ष्म थी। एक ओर धर्म भावना से ओत–प्रोत थी, वहीं दूसरी ओर शुद्ध कलात्मक भी थी। लोक–मानस की अनेक–मुखी अभिव्यक्तियों के सूक्ष्म अध्ययन से ज्ञात होता है कि संसार के प्रायः सभी देशों में उपास्य वीरनायक, भयावह राक्षस और अलौकिक देवी–देवता अथवा अतिप्राकृतिक शक्तियाँ किसी न किसी रूप में निरन्तर सत्ता बनाये रही हैं। परम्पराएँ जिन्हें मनुष्य ने बनाया है अपना प्रभाव बाहर से डालती है, किन्तु कला भीतर से मानव स्वभाव को रूपान्तरित करती है। कला, सामाजिक अनुभव के साथ मनुष्य की प्रवृतियों तथा भावनाओं के संश्लेषण एवं समाधान से युक्त स्वरूप की अभिव्यक्ति हैं।

सिर्फ रेखाकंन मात्र से चित्रों में सौन्दर्य के भाव को व्यवस्थापित नहीं किया जा सकता। इसीलिए रंगों के प्रतीकात्मक रूप को समझते हुए कलाकार द्वारा चित्रांकन से चित्रों के अर्थ तथा उसके उद्देश्य की उपयोगिता का बोध कराया गया है। इस प्रकार राजस्थानी आचार्यों ने चित्रकला की समस्त व्यवहारिक आवश्यकताओं का निर्देश ही नहीं अपितु उसे एक दार्शनिक आधार भी प्रदान किया है।

भारतीय तत्व दर्शन में त्रिगुणात्मिका सृष्टि के तीन रंग माने गये हैं – सत्व का श्वेत, रजस का लाल एवं तमस का काला। काव्य शास्त्रीय आचार्यों ने रसों के भी रंग माने हैं। शृंगार का श्याम, क्रोध का लाल, करुण का भूरा (कपोत वर्ण), भय का काला, अद्‌भुत का सुवर्णाभ पीत, हास्य का श्वेत, वीर का गौर वर्ण, वीभत्स का नील एवं शान्त रस का भी श्वेत वर्ण माना गया हैं। हरा रंग आशा एवं समृद्धि का द्योतक हैं। मनोविज्ञान के अनुसार रंगों का प्रभाव आकृति से कम नहीं होता।

रंगों के माध्यम से किसी भी आकार को पूर्णता दी जाती है तथा सौन्दर्य वृद्धि के साथ साथ वस्तु– सादृश्य एवं प्रतीकता की सृष्टि की जाती हैं। रंगों के तीन प्रमुख गुण हैं – रंगत, बल एवं घनत्व। रंगत के आधार पर लाल, पीला एवं नीला मुख्य रंग स्वीकृत हैं। इन रंगों से अन्य रंगों का निर्माण होता है। चमकदार एवं अमिश्रित रंगों में अधिक घनत्व होता हैं। रंगों का प्रभाव हमारे तन और मन पर पड़ता है। किसी रंग के प्रकाश अथवा छाया के रूप को 'बल' कहते हैं। रागों पर आधारित रागमाला चित्रकृतियां रंगों के कारण ही जीवन्त हो उठती हैं।

शास्त्रीय रागों में नायिकाओं एवं ऋ़तुओं का भी वर्णन किया गया है। राजस्थानी लघु चित्रशैली में 'बारहमासा' एवं 'नायिका भेद' आदि में प्रकृति अंकन प्रायः अलंकारिक एवं प्रतीकात्मक दृष्टिगत होता हैं। ऋतुओं के अनुसार रंगों का प्रयोग जैसे चौत्र मास में रंगो की रंग बिरंगी छटा, वैशाख में न्यून हरितिमा तथा ग्रीष्मकाल के ज्येष्ठ मास में पीत वर्ण की अधिकता दर्शायी गई हैं। श्रावण में हरित पृष्ठभूमि, मेघपूरित नभ तथा स्याह आकाश दृ ष्टिगत होता हैं। राजस्थानी ऋतु चित्रण रंग एवं रेखांकन के माध्यम से भाव अभिव्यक्तिकरण में श्रेष्ठ माने जाते हैं। संभवतः रागमाला चित्रों की मूल प्रेरणा ऋतु गीतों एवं नायिका भेद से ली गई हैं। यही कारण है कि सभी शैलियों में भिन्न राग–रागिनियों का चित्रण होने से रंग चयन में भी भिन्नता आई। रागमाला चित्रों में रंग प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त हुये तथा चित्रों के भावों को उभारने में रंगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। रागमाला चित्रों की समस्त शृंखला को वास्तव में संगीत की अपेक्षा रंगों की कला कहा जाना चाहिये, क्योंकि चित्रकारों ने विभिन्न रंगों से भावगत स्थिति को दर्शाया है। प्राथमिक रंगों का इतने संतुलित ढंग से चित्रण किया है कि कुछ सीमित रंग योजना में भी विशाल मनोभाव को प्रदर्शित करने में सक्षम रहा है क्यों कि रंग योजना प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक है जिसका सीधा संबंध राजस्थान चित्रण की प्रारंभिक परम्परा से जुड़ा हुआ है। भाव राजस्थानी चित्रण का प्राण है तो संचार रेखाओं में हैं। यहां के चित्रों पर यह उक्ति सार्थक सिद्ध होती है।

राजस्थान के कलाकारों ने चित्रों में लाल, पीला, नीला, हरा रंग अधिक प्रयोग किया है। आश्चर्य इस बात का है कि इन रंगों की चमक आज भी वैसी ही है। ये रंग अपनी मूल प्रखरता, तेजस्विता और आभा से पूर्ण हैं। इस कारण सम्पूर्ण चित्र में सौन्दर्य व आकर्षण निहित है। यूरोपीय प्रतिपक्षी कलाकारों के विपरीत भारतीय चित्रकारों ने अपने चित्रों में अनेक परिदृश्यों को शामिल किया हैं। इन चित्रों में प्रयोग किए जाने वाले रंग खनिजों एवं सब्जियों, कीमती पत्थरों तथा विशुद्ध चांदी एवं सोने से बनाए जाते थे जो आज भी पारम्परिक चित्रकारों द्वारा प्रयोग किये जाते हैं । रंगों को तैयार करना और उनका मिश्रण करना एक बड़ी लंबी प्रक्रिया हैं। इसमें कई सप्ताह लग जाते हैं और कई बार तो सही परिणाम प्राप्त करने के लिए महीने भी लग जाते हैं।

राग वसंत चित्र में नीले रंग के भगवान कृष्ण पीले रंग के कपड़े पहने हुए हैं, और महिलाएं विभिन्न वाद्य यंत्र झांझ और एकतारा बजाती चित्रित हैं। वातावरण में खिलखिलाते रंगों के द्वारा प्रकृति की नई शुरुआत का आभास करता है। नए आम के फूल, नए केले के फूल, हरियाली और फूल हर जगह मोर, बत्तख और हंस या गीज के साथ देखे जा सकते हैं, जो प्रेम और जुनून का एक शाश्वत प्रतीक है। हवा में गति और लय है और यह वसंत का स्वागत करते हुए आनंद और उमड़ती हुई खुशी का अहसास करता है। कृष्ण और गोपियों को पारंपरिक राजस्थानी शैली के कपड़े पहनाए जाते हैं और सोने की कढ़ाई के साथ चमकीले रंग दर्शाए जाते हैं। कृष्ण को गहरे नारंगी रंग की कमीज, पीले रंग के सुनहरे तामझाम के साथ और खड़ाऊ (चप्पल) पहने हुए चित्रित किया गया है। गोपियों को तंग चोली और धोती पहनाई जाती है, जिसके किनारे नीचे की ओर होते हैं। इसमें लाल, पीले, नारंगी, नीले और हरे रंग का प्रयोग खूब होता है। कहा जाता है कि पीले और नारंगी रंग राजस्थानी कलाकारों द्वारा राजस्थान के सूर्य के प्रकाश के परिदृश्य को चित्रित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले गर्म रंग हैं। हरा वनस्पति का रंग है और इसका उपयोग मैदान और जंगल की हरियाली दिखाने के लिए किया जाता है, जबकि नीला आकाश के रंग को दर्शाता है जो कि अनंत है। वसंत ऋतु में परिदृश्य की सुंदरता और पुरुषों और

महिलाओं की कामुक भावना को व्यक्त करने के लिए प्राथमिक रंगों का व्यापक उपयोग होता है। यह राग वसंत की "संघ में प्रेम" की भावना को व्यक्त करने का प्रयास करता है। जीवंत रंग और विषय को रागमाला श्रृंखला को राजपूत चित्रकला में एक अनूठा स्थान देखने को मिलता है।

निष्कर्षः

रागमाला पेंटिंग अद्भुत राजस्थानी लघु चित्रशैली कला का उत्कृष्ट प्रतिनिधित्व है। वे उस काल के राजपूत चित्रों के अध्ययन में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। चित्रों में भारतीय चित्रों के कई पहलू हैं, जो सभी खूबसूरती से एक में विलीन हो गए हैं। नायक और नायक आमतौर पर पुरातनता में पारंपरिक पाठ के वर्गीकरण पर आधारित होते हैं। ज्यादातर स्थानीय सामग्री का उपयोग करते हुए, कलाकार ऐसे चित्र बनाने में सफल रहे जो अब तक की सबसे सुंदर कलाकृतियों में से एक हैं। राजस्थानी शैली ने पुराने प्रारूप को अपना आधार बनाकर रखने के साथ–साथ नई शैलियों और पैटर्न के परिचय सहित सफलतापूर्वक सुंदर चित्रण किया। हालांकि स्पष्ट रूप से कामुक रूपों में प्रस्तुत किया गया है, किन्तु यह किसी अपरूप में न होकर आनंद भाव की अनुभूति कराता है। राजस्थानी शैली के चित्र हमारे इंद्रिय–अनुभव को पार करते हैं और हमें परमानंद के क्षेत्र में ले जाते हैं– उच्च और आध्यात्मिक भावना वातावरण में।

संदर्भ :

1. वर्मा, डॉ. नाथूलाल – राजस्थानी चित्र शैली की विभिन्न चित्रण विधियां,
2. जोशी, डॉ. इंदु, चौधरी, जितेंद्र कुमार – भारतीय धर्म और संस्कृति में कला का अन्तःसंबन्ध .

   ीजजचेरूध्ध्कवपण्वतहध्10ण्5281ध्मदवकवण्3592640ण

3. कासलीवाल, मीनाक्षी 'भारती' – ललितकला के आधारभूत सिद्धांत,
4. ीजजचेरूध्ध्हलंदण्ंदलचनतेनपजण्वतह
5. ीजजचेरूध्ध्पिदकपण्हाजवकंलण्पदध्हा.पद.ीपदकप
6. कासलीवाल, मीनाक्षी 'भारती' – ललितकला के आधारभूत सिद्धांत,
7. शुक्ल, डॉ. अन्नपूर्णा – किशनगढ़ चित्र शैली,
8. नीरज, डॉ. जयसिंह – राजस्थानी चित्रकला,
9. कुलश्रेष्ठ, बृजेश – राजस्थान की लघुचित्र शैलीयां,
10. सिंह, डॉ0 रीता – राजस्थानी कला व संस्कृति का सहोदर स्वरूप

   ीजजचरूध्ध्ंदनइववोण्बवउध्चतवकनबजध्ंतजपेजपब.दंततंजपवद

11पिसमरूध्ध्ध्ब्रूध्न्मतेध्कमससध्क्मोजवचध्2दक:20चंचमतध्44ऋप्श्रत्ळ14ऋब्श्1ऋ06;रागमाला:20चित्राद्ध